(80)

संस्कृत विश्वविद्यालय ग्रन्थमाला का 116 पुष्प

द्विवर्षीय अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम : समीक्षात्मक विश्लेषण

(शिक्षा संकाय द्वारा आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी)

(Seminar Proceeding)

8-9 मार्च, 2018

प्रधान सम्पादक

प्रो. मुरलीमनोहर पाठक

कुलपति

सम्पादक

प्रो. रमेश प्रसाद पाठक

प्रो. सदन सिंह

प्रो. रचना वर्मा मोहन

सम्पादक मण्डल

डॉ. विचारी लाल मीणा

डॉ. पिंकी मलिक

डॉ. परमेश कुमार शर्मा

डॉ. आरती शर्मा

श्रीलालबहादुरशास्त्रीराष्ट्रियसंस्कृतविश्वविद्यालयः

(केन्द्रीयविश्वविद्यालयः)

नवदेहली-110016

प्रकाशक:

श्रीलालबहादुरशास्त्रीराष्ट्रियसंस्कृतविश्वविद्यालय:

बी 4, कुतुबसांस्थानिकक्षेत्रम्, नवदेहली-110016

© प्रकाशकाधीन:

प्रकाशनवर्षम् : 2022

ISBN : 81-87987-93-6

मूल्यम् : ₹ 300.00

मुद्रक:

डी.वी. प्रिन्टर्स

97-यू.बी., जवाहरनगरम्, देहली-110007

अध्यापक शिक्षा एवं विद्यालय सम्बद्धता कार्यक्रम

–डॉ. प्रदीप कुमार झा
असि.प्रो. (संविदा), शिक्षाशास्त्र-विभाग
श्रीलालबहादुरशास्त्रीराष्ट्रियसंस्कृतविद्यापीठम्
नवदेहली

शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम के द्वारा व्यक्ति को विभिन्न कौशलों से पूर्ण करके उसे 'अध्यापक' जैसे महत्त्वपूर्ण पद पर बिठाया जाता है। अध्यापक बनने से पूर्व यद्यपि उसमें अध्यापन के अनौपचारिक रूप से बहुत सारे गुण, अभिरुचि, ज्ञान, इच्छा, अभिलाषाएँ इत्यादि विद्यमान रहते हैं लेकिन आज के वर्तमान समय में औपचारिक रूप से किसी प्रशिक्षण केन्द्र (विश्वविद्यालय, महाविद्यालय आदि) से **'अध्यापक प्रशिक्षण कार्यक्रम'** का प्रमाण पत्र प्राप्त करने के बाद ही योग्य माना जाता है। एक सफल अध्यापक में ज्ञान और सम्प्रेषण-कौशल का समुचित समावेश होना आवश्यक है। इस सन्दर्भ में संस्कृत साहित्य के महाकवि कालिदास ने भी अपने ग्रन्थ में उल्लेख करते हुए बताया है-

श्लिष्टा क्रिया कस्यचिदात्मसंस्था
संक्रान्तिरन्यस्य विशेषयुक्ता।
यस्योभयं साधु स शिक्षकाणां
धुरिप्रतिष्ठापयितव्य एव॥

अर्थात् कोई भी अध्यापक तब तक सफल अध्यापक नहीं हो सकता जब तक कि वह अपने ज्ञान को समुचित विधियों, प्रविधियों, पद्धतियों, साधनों इत्यादि के द्वारा सफलता पूर्वक सम्प्रेषित न कर सकें।

[illegible] विश्वविद्यालय ग्रन्थमाला का 114 पुष्प

अध्यापक शिक्षा के संवर्धन में कौशल विकास : प्रासंगिकता एवं चुनौतियाँ

शिक्षा संकाय द्वारा आयोजित संगोष्ठी-कार्यवृत्त

(Seminar Proceeding)

28-29 मार्च, 2017

प्रधान सम्पादक

प्रो. मुरली मनोहर पाठक

कुलपति

सम्पादक

प्रो. रमेश प्रसाद पाठक

प्रो. सवन सिंह

प्रो. रचना वर्मा मोहन

सम्पादक मण्डल

1. डॉ. सुरेन्द्र महतो
2. डॉ. प्रेमसिंह सिकरवार
3. डॉ. शिवदत्त आर्य
4. डॉ. जितेन्द्र कुमार

श्रीलालबहादुरशास्त्रीराष्ट्रियसंस्कृतविश्वविद्यालयः

नवदेहली-110016

प्रकाशक:

श्रीलालबहादुरशास्त्रीराष्ट्रियसंस्कृतविश्वविद्यालय:

बी-4, कुतुबसांस्थानिकक्षेत्रम्, नवदेहली-110016

© प्रकाशकाधीन:

प्रकाशनवर्षम् : 2022

ISBN : 81-87987-91-X

मूल्यम् : ₹ 325.00

मुद्रक:

डी.वी. प्रिन्टर्स

97-यू.बी., जवाहरनगरम्, देहली-110007

अध्यापन में सम्प्रेषण कौशल का महत्त्व

डॉ. प्रताप कुमार झा

सहायक आचार्य, शिक्षाशास्त्र विभाग,

श्रीलालबहादुरशास्त्रीराष्ट्रियसंस्कृतविद्यापीठ, नवदेहली

अच्छे अध्यापक के निर्माण प्रक्रिया में शिक्षा को बहुत सारी सोढ़ियाँ चढ़नी पड़ती है, और ये सीढ़ियाँ अध्ययन कर्म के आरंभ से लेकर अंत तक निरंतर चलती रहती है। सदैव अपने शिक्षण व अधिगम क्रिया में सकारात्मक परिवर्तन लाते हुए ही कोई अपने अंदर एक आदर्श अध्यापक के व्यक्तित्व का निर्माण कर सकता है। अध्यापक के लिए जो सबसे आवश्यक वस्तु या आंतरिक उपकरण है वह है उसका आत्मविश्वास। आत्मविश्वास के बगैर अध्यापन कार्य अधूरा ही नहीं बल्कि एक कपोल-कल्पना मात्र है। जिस तरह व्यापार करने में निश्चित पूँजी की जरूरत होती है, उसी प्रकार अध्यापन रूपी व्यवसाय में भी आत्मविश्वास, अध्यापक की पूंजी होती है, जिसका वह निरंतर प्रयोग करता रहता है और उसकी अभिवृद्धि करता है। जिस प्रकार मिठाई को शक्कर एक स्वरूप प्रदान करता है उसी प्रकार अध्यापक के लिए अत्मविश्वास का भी शिक्षण में अमूल्य योगदान है। आत्मविश्वास के विकास की भी एक निश्चित प्रक्रिया है जो विभिन्न अवस्थाओं में से गुजरते हुए अध्यापक को संपूर्ण बनाता है। इस प्रक्रिया में अध्यापक के सेवा-पूर्व प्रशिक्षण, सेवाकालीन-प्रशिक्षण, शैक्षिक संस्था तथा अन्यान्य प्रवृत्तियों का सदैव सकारात्मक प्रयास निर्भर करता है। अध्यापन वृत्ति में आत्मविश्वास की वृद्धि के लिए या उत्पन्न करने के लिए जो सबसे पहला कारण होता है वह है उसका विषय-गत ज्ञान भंडार। एक